दीर्घजीवी कछुआ

बिमल श्रीवास्तव

कछुए की पीठ जितनी कठोर होती है उतना ही वह दीर्घजीवी होता है। इसकी उम्र कुछ सौ सालों तक हो सकती है। किन्तु अधिकांश कछुए अपनी अधिकतम आयु सीमा तक पहुंचने से पहले ही मानव द्वारा अथवा कुछ अन्य प्राकृतिक शत्रुओं द्वारा बेमौत मार दिए जाते हैं।

दुनिया भर में कछुओं की लगभग 200 प्रजातियां पाई जाती हैं। इन्हें तीन मुख्य श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है; भूमि पर रहने वाले कछुए, नदी, तालाब अथवा झील जैसे मीठे पानी में रहने वाले कछुए तथा खारे पानी यानी सागर में रहने वाले कछुए। ये बेर के आकार से लेकर एक बड़ी मोटरकार के आकार तक के हो सकते हैं।

कछुओं का अस्तित्व अत्यन्त प्राचीन है। एक अनुमान के अनुसार लगभग नौ करोड़ वर्षों से कछुए धरती पर विराजमान हैं। इस प्रकार से इन्हें डायनोसौर के समकालीन माना जा सकता है। लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि इतने लम्बे अस्तित्व के बावजूद कछुओं के आकार, प्रकार तथा अन्य गुणों में बहुत कम परिवर्तन आया है।

कछुओं की प्रमुख विशेषता उनके शरीर को ढंकने वाला मज़बूत कवच है। हड्डियों का बना यह मज़बूत ढांचा वास्तव में उनकी पसलियों का विकसित रूप है। यह न केवल उनके मुलायम शरीर को ढंक लेता है, बल्कि शत्रुओं से उनकी रक्षा करने में भी सहायक होता है। कछुए अपना सर, पूंछ तथा पैर भी इस कवच के अन्दर छुपा लेते हैं।

समुद्री कछुओं में दिशा ज्ञान की प्रबल शक्ति होती है। वे दो से तीन वर्षों बाद भी अपने जन्म स्थान को पहचान कर वहां पहुंच सकते हैं। कई बार तो ये चार-पांच हज़ार किलोमीटर तक की दूरी तय करके भी अपने जन्म स्थान पर पहुंच जाते हैं। वैज्ञानिकों के लिए यह अबूझ पहेली अभी तक बनी हुई है कि वे ऐसा कैसे कर पाते हैं।

सागर तट पर पहुंचकर मादा कछुआ रेत में गड्ढा करके अण्डे देती है और फिर उसे रेत से ढंककर वापस चल देती है। बाद में अण्डों से निकले बच्चे अपनी अद्भुत दिशा आभास की शक्ति के सहारे वापस सागर की ओर चले जाते हैं।

कछुओं को सामान्यतः धीमी गति का प्रतीक माना जाता है। किन्तु बहुत कम लोग जानते हैं कि समुद्री कछुए बड़े तेज़ तैराक होते हैं और पानी में 24 कि.मी. प्रति घण्टे की रफ्तार से तैर सकते हैं। इस प्रकार उन्हें मैराथन दौड़ (42 कि.मी.) पूरा करने में केवल पौने दो घण्टे लगेंगे, जबकि इतनी दूरी को मैराथन धावक दो घण्टे से भी ज़्यादा समय में पूरा करते हैं। वास्तव में पानी में कछुओं की गति उनकी भूमि की गति से लगभग 75 गुना अधिक होती है।

कछुओं के आंसू

भले ही आंसू बहाने का ज़िक्र हो तो मगरमच्छ की बात आना अपरिहार्य है, लेकिन कछुए भी इसमें पीछे नहीं। समुद्री कछुए आंसू बहाकर अपने शरीर के अनावश्यक नमक को बाहर निकालते रहते हैं। ऐसा नहीं करने से नमक की अधिकता के कारण उनकी मृत्यु तक हो सकती है।

मादा कछुआ सागर तट के नज़दीक किसी एकान्त

समुद्री कछुओं में दिशा ज्ञान की प्रबल शक्ति होती है। वे दो से तीन वर्षों बाद भी अपने जन्म स्थान को पहचानकर वहां पहुंच सकते हैं। कई बार तो ये चार-पांच हज़ार किलोमीटर तक की दूरी तय करके भी अपने जन्म स्थान पर पहुंच जाते हैं। वैज्ञानिकों के लिए यह अभी तक एक अबूझ पहेली बनी हुई है कि वे ऐसा कैसे कर पाते हैं।

रेतीली जगह पर गड्ढा खोदकर अपने अण्डे देती है। इस बीच रेत पर बने उसके पैरों के निशान के सहारे शिकारी अण्डों के स्थान का पता लगाकर उन्हें नष्ट कर देते हैं। मादा कछुआ एक बार में लगभग 100 अण्डे देती है। अण्डे देते समय भी मादा लगातार आंसू बहाती रहती है; दर्द के कारण नहीं, बल्कि शरीर के अनावश्यक नमक को बाहर निकालने के लिए। इसके बाद वह गड्ढे को रेत से ढंककर चल देती है ताकि वे गर्म बने रहें। अण्डे देने के बाद मादा कछुआ वापस सागर को लौट जाती है और अपने अण्डे/बच्चों का मुंह फिर नहीं देखती।

इस बीच गर्मी के कारण अण्डे स्वत: ही सेये जाते हैं और दो तीन महीनों के भीतर उनसे बच्चे निकल आते हैं। ये बच्चे रेत में दबे होते हैं,और किसी प्रकार रेत को हटाकर बाहर निकलते हैं। इस काम में उन्हें दो या तीन सप्ताह तक लग जाते हैं। रेत से बाहर आते ही वे तेज़ी से पानी की और दौड़ पड़ते हैं ताकि चील, गिद्ध, कुत्तों तथा समुद्री पक्षियों आदि के आक्रमण से बच सकें।

अस्तित्व को खतरा

अनुमान के अनुसार प्रति 1000 अण्डों में से मुश्किल से एक बच्चा तट तक सुरक्षित पहुंच पाता है। बाकी सब चील, कौओं आदि द्वारा मारे जाते हैं या फिर अण्डे के रूप में ही सांप, केकड़े आदि का भोजन बन जाते हैं। जो कछुए सागर तक पहुंच भी जाते हैं उनमें से अनेक शार्क या अन्य बड़ी मछलियों द्वारा खा लिए जाते हैं। वैसे कछुओं का सबसे बड़ा शत्रु मानव है, जो न केवल उनके अण्डों को चुरा लेता है, बल्कि कछुओं का भी

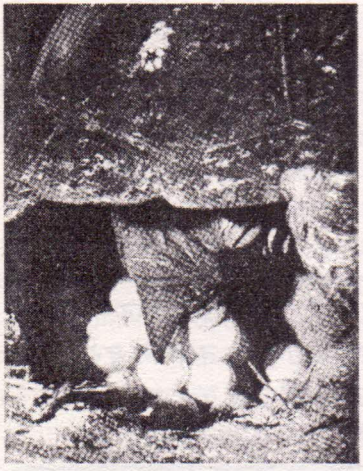

ऑस्ट्रेलिया की हल्की गर्म रेत में गड्ढा खोदकर अण्डे देती मादा कछुआ। लगभग सौ अण्डे देने के बाद वह गड्ढे को रेत से ढंककर चल देती है। प्रजनन काल में एक परिपक्व मादा अण्डों की ऐसी 2 से 5 खेप देती है।

कछुए का ताज पहने यह स्थानीय व्यापारी। इस कछुए की कीमत इसके मांस और सुन्दर चितकबरी पीठ से आंकी जाती है। इसी से कछुए की शल्क के असली आभूषण बनते हैं।

शिकार करता है। विश्व में अनेक स्थानों पर कछुओं का मांस खाया जाता है तथा उनके अण्डों को भी स्वादिष्ट माना जाता है। हमारे देश में उड़ीसा तथा प. बंगाल और कुछ अन्य क्षेत्रों में भी ऐसा ही माना जाता है। इसीलिए तटों पर छुपाए गए अण्डों को लोग ढूंढ निकालते हैं।

मांस के अलावा कवच के लिए भी कछुओं का शिकार किया जाता है। कुछ जातियों के कछुओं के शरीर का कवच बहुत खूबसूरत होता है। इससे सजावट की वस्तुएं जैसे कंघियां, चूड़ियां, कान की बालियां, माला आदि बनाई जाती हैं। इन्हीं सब के चलते कछुओं की संख्या दिन प्रतिदिन कम होती जा रही है और उनके अस्तित्व को खतरा उत्पन्न हो गया है।

समुद्री कछुओं की प्रमुख जातियों में ऑलिव रिडले कछुआ, लेदर बैक कछुआ, हॉर्सबिल कछुआ तथा ग्रीन (हरा) कछुआ प्रमुख हैं। इनमें से कुछ जातियों के कछुए विशालकाय होते हैं। अब तक के ज्ञात कछुओं में सबसे बड़े कछुए की लम्बाई (सर से पूंछ तक) तीन मीटर तथा भार 1800 कि.ग्रा. था। वह एक बड़ी कार के भार तथा आकार जैसा था।

भूमि पर पाए जाने वाले कछुओं में विश्व के सबसे बड़े कछुए हिन्द महासागर में मॉरिशस के निकट स्थित सेशल्स नामक द्वीप समूह के बर्ड द्वीप में पाए जाते हैं। फिलहाल यहां का एक 170 वर्ष आयु वाला कछुआ, इस्मेराल्डा, विश्व का सबसे बड़ा ज़मीनी कछुआ माना जाता है। इसका वज़न 304 किलो है। इन कछुओं पर बच्चे सवारी करते हुए देखे जा सकते हैं।

हमारे देश में उड़ीसा के समुद्री किनारों पर ऑलिव रिडले कछुए हर साल अण्डे देने आते हैं। इसे एक बड़ी घटना माना जाता है तथा समाचार पत्रों तक में इसके विवरण निकलते हैं। ***(स्रोत विशेष फीचर्स)***